P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कृषि व्यवसाय से लोगों के प्रवजन के प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अमित मलिक
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
डी0ए0वी0 महाविद्यालय,
मुजफ्फरनगर (उ0प्र0),
भारत

सारांश

संक्षेप में स्वतन्त्रता के पश्चात् ग्रामीण अंचलों में शहरों की ओर प्रवजन में वृद्धि हुई है। जिसका अहम् कारण कृषि कार्य द्वारा आमदनी का घटना तथा लागत का बढ़ना है। ग्रामीण अंचल में लोगों की धारणा है कि कृषि कार्य के माध्यम से मात्र मूलभूत आवश्यकताओं को तो पूरा कर सकते है परन्तु जीवन स्तर तथा जीवन शैली में सुधार नहीं हो सकता है। उक्त धारणा को बलवती बनाने में कृषक मजदूरों का प्रवजन भी एक अहम् कारक है जो कृषि कार्य को छोड़कर शहरी क्षेत्रों में मजदूरी कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा में वृद्धि से भी यवाओं में कृषि कार्य के अतिरिक्त व्यवसाय तथा नौकरी की तलाश की राह पर ला दिया है।

मुख्य शब्द : प्रवजन, कृषि व्यवसाय, ग्रामीण अंचल, कृषक मजदूर।

प्रस्तावना

जहाँ शिक्षा में वृद्धि किसी देश के लिए उपयोगी है वही शिक्षित युवा चाहे किसी भी व्यवसाय में हो बेहतर कर दिखाता है भले ही वह कार्य कृषि कार्य हो। स्वतन्त्रता के पश्चात् से ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर प्रवजन में वृद्धि हुई जिसका मुख्य कारण ग्रामीण अंचल में कृषि कार्यों से विमुखता तथा शहरों में चकाचौंध का आकर्षण है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य प्रवजन का सामाजिक मूल्यांकन करना तथा यह ज्ञात करना है कि कृषि व्यवसाय से प्रवजन का ग्रामीण समाज पर कैसा प्रभाव पड़ रहा हैं। कृषि व्यवसाय से प्रवजन तथा ग्रामीण जनसंख्या का शहरी क्षेत्र में प्रवजन सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है जोकि एक सकारात्मक पहलू है वही प्रवजन के नकारात्मक पहलू के रूप में जजमानी व्यवस्था का विघटन, संयुक्त परिवार का विघटन, आर्थिक संस्थाओं में परिवर्तन तथा शहरी क्षेत्र में भीड का बढना है।

भारत वर्ष मूलतः एक कृषि प्रधान देश है। स्वतन्त्रता के समय भारत की लगभग 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यों में लगो थी तथा गांवों में निवास करती थी। भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौ0 चरण सिंह जी का कहना था कि देश की खुशहाली का रास्ता गांवों से होकर जाता है। उनका कहने का अर्थ था कि यदि 75 प्रतिशत खुशहाल होगा तो पूरा देश खुशहाल होगा लेकिन पिछले 70 वर्षों में गांवों के लोग कृषि व्यवसाय को छोड़कर शहरों की ओर प्रवजन कर रहे है। इसके पीछे अनेकों कारण कार्य कर रहे है लेकिन मुख्य कारण कृषि कार्यों से लोगों में असन्तुष्टि की भावना है। ऐसा भी नहीं है कि भारत में पहले शहर नहीं थे। 2000 वर्ष पहले भी भारत में बड़े–बड़े शहर थे। मनुष्य ने अपने आरम्भिक जीवन में भी प्रवजन किया। तभी आज विभिन्न जाति, धर्म, प्रजाति के लोग अलग–अलग स्थानों पर दिखायो देते हैं। सांस्कृतिक विविधता को बनाये रखने के लिए प्रवजन एक सकारात्मक कारक भी भूमिका निभाता है लेकिन वही दूसरी ओर प्रवजन के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं। भारत में गांवों से शहरों की ओर प्रवजन को उसी बात से समझा जा सकता है कि स्वतन्त्रता के समय भारत की नगरीय जनसंख्या 6 करोड़ थी। वही आज नगरों की आबादी बढकर लगभग 50 करोड़ हो गयी है। संयुक्त राष्ट्र संघ का मानना है कि यदि भारत में गांवों से शहरों की ओर इसी तरह प्रवजन चलता रहा तो 2030 तक भारत की कुल आबादी का लगभग 46 प्रतिशत कृषि कार्यों को छोड़ चुका होगा।

भारत की ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के उद्देश्य से कृषि व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसायों को अपना रहा है। शिक्षा ने इस प्रवजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पढ़ने–लिखने के

बाद आज का युवा खेती–बाडी के कार्य को नहीं करना चाहता है। इस व्यवसाय प्रवजन का ग्रामीण समाज पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। प्रत्यक्ष प्रभावों की यदि बात की जाये तो जजमानी व्यवस्था का विघटन, संयुक्त परिवारों का विघटन, राजनैतिक संस्थाओं में परिवर्तन, जाति व्यवस्था में परिवर्तन, धार्मिक संस्थाओं में परिवर्तन, स्त्रियों की स्थिति में परिवतन को स्पष्टतः देखा जा सकता है।

वही अप्रत्यक्ष प्रभावों की यदि बात की जाये तो ग्रामीण हाटों में कभी देखने को मिलती है। कृषि का व्यापारीकरण हुआ है। गांवों की आत्मनिर्भरता भी कम होने लगी है। कृषि कार्यों में यंत्रीकरण का प्रभाव बढा है। अनौपचारिक सम्बन्ध कमजोर होने लगे है। आज कृषि कार्यों में लगे लोग भी टी0वी0, मोबाइल, अखबार से प्राप्त जानकारियों से प्रभावित होने लगे है।

वही प्रवजन से कुछ गम्भीर समस्याओं ने भी जन्म लिया है जैसे– गांवों में कृषि कार्यों के लिए मजदूरों की समस्या खड़ी हो गयी है। सरकारी योजना मनरेगा ने रही सही कसर पूरी कर दी है। वहीं प्रवजित लोग शहरों में नयी समस्याओं को जन्म दे रहे है जैसे– गन्दी बस्तियों का उदय, स्थान की कमी, प्रदूषण, बढ़ते हुए अपराध, उत्तेजक और व्यापारिक मनोरंजन, मानसिक तनाव, व्यैक्तिक विघटन तथा मद्यपान आदि कुछ प्रमुख समस्यायें है। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कृषि कार्यों में लगे लोगों से कुछ प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास किया गया–

1. क्या आप जजमानी व्यवस्था को मानते है?
2. क्या कृषि कार्यों के लिए आपको मजदूर आसानी से मिल जाते है?
3. क्या आपक परिवार में से किसी सदस्य ने कृषि कार्यों को छोड़ा है।
4. क्या आपके परिवार से किसी सदस्य ने अन्य व्यवसाय को अपनाया है।

उपरोक्त अध्ययन कार्य के लिए तथ्यों का संकलन मुजफ्फरनगर जनपद के तेजलहेडा गांव से किया गया है। मुजफ्फरनगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक धनाढय जनपद है। तेजलहेडा गांव में लगभग 4500 मतदाता निवास करते है। लगभग बीस जातियों के लोग गांव में रहते हैं। हिन्दू और मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग लगभग साथ–साथ निवास करते है।

उपरोक्त अध्ययन के लिए 100 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन प्रविधि के आधार पर किया गया है। उत्तरदाताओं से सूचना प्राप्ति के लिए साक्षात्कार तथा अनुसूची प्रविधि को अपनाया गया है। द्वितीयक स्रोतों के लिए अखबार से सूचनायें प्राप्त की गयी है। यह अध्ययन कार्य मार्च 2017 से मई 2017 के बीच सम्पन्न किया गया है। इस गांव में मतदाता मुख्य रूप से कृषि कार्यों में लगे है लेकिन इसी के साथ–साथ कुछ मतदाताओं ने कृषि कार्यों को छोड़कर अन्य व्यवसायों को अपना लिया है। इसी विषय को लेकर उत्तरदाताओं से बात की गयी। जिसका निष्कर्ष निम्न प्रकार है–

निष्कर्ष

1. 100 उत्तरदाताओं में से 40 उत्तरदाताओं की आयु 20–40 वर्ष के बीच है जबकि 41–60 वर्ष वाले उत्तरदाताओं की संख्या 35 है। वही 60 वर्ष से ऊपर वाले उत्तरदाताओं की संख्या 25 है।
2. 43 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में लगे है। 17 प्रतिशत उत्तरदाता अभी अध्ययन कार्यों में लगे है। वही 20 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आपको बेरोजगार मानते है। वही 20 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य व्यवसायों में लगे है।
3. 54 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास कृषि योग्य भूमि है। वही 46 प्रतिशत उत्तरदाता भूमिहीन है।
4. 82 प्रतिशत उत्तरदाताओ का मानना है कि जजमानी व्यवस्था समाप्त हो गयी है। वही 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि जजमानी व्यवस्था अभी भी कार्य कर रही है।
5. 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार खेती–बाड़ी के लिए श्रमिकों का अभाव है। वही 27 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है।
6. 47 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों में से किसी न किसी सदस्य ने कृषि कार्यों को छोड़ा है। वही 53 प्रतिशत उत्तरदाताओं का उत्तर ना में है।
7. 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों के सदस्यों ने अन्य व्यवसाय को अपनाया है जबकि 32 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों में ऐसी स्थिति नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Modi, Anita "Role of Migration in Urban Growth, Yojna, pp. 7-10

Research paper of Maan & Rogoly : 2002

Demographics Written by Prof. J.P. Mishra

Migration : Still a revival strategy for rural India by Anupam Hazze pp. 3-5

Article published in Yojana, Dec. 2010

रावत, हरिकृष्ण 2018, समाजशास्त्र शब्दकोष, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर